विज्ञान एवं अध्यात्म

Poonam Pandey

Research scholar (Department of Hindi), HimaliyaUniversity Dehradun, Uttarakhand

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति मानी गई है और यह पूर्ण रूप से अध्यात्मिक दर्शन पर आधारित है। इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से हमारे शास्त्रों में भी मिलता है भारत भूमि सदियों से संपूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय रही है। यहां की अध्यात्मिक धरोहर पाश्चात्य देशों के लिए हमेशा से आकर्षण का केंद्र रही है। लेकिन वर्तमान युग में विज्ञान के अभूतपूर्व योगदान से मानव जीवन जिस तरह प्रभावित हुआ है वह वास्तव में सराहनीय वाचिंतनीयदोनो ही है। जिस प्रकार मनुष्य जीवन विज्ञान के साथ जुड़कर भौतिक स्तर पर नितान्त सुखमय व आसान हुआ है, उसने हमें वास्तव में विज्ञान के अधीन कर दिया है। विज्ञान की सत्ता आज के युग में सर्वोच्च प्रतीत होती है। उसकी चकाचौंध कुछ और देखने या सोचने का समय तक नहीं दे रही। उदाहरण के लिए हम कंप्यूटर के आविष्कार वा उसकी आज तक की यात्रा देख सकते हैं। वह मात्र 50 वर्ष में अपनी 5th generation तक पहुंच गया है। जहां आरम्भ में उस भारी भरकम मशीन को निर्देशित करने के लिए इतना उद्धम करना पड़ता था, उसको निर्देशित करने के लिए कई तरह की मशीनी भाषाओं का अविष्कार भी हुआ, और वह आम आदमी की पहुंच बहुत दूर था। परंतु आज वही मशीन आपके हाथ में घड़ी नुमा आकार लेकर आपकी धड़कनों के आधार पर आपको सब कुछ बता रही है। उसको कुछ बोलने की जरूरत तक नहीं। आज हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बात करते हैं। यह विज्ञान ही है जो आपको नित नए आविष्कारों से हतभ्रम किये बैठा है। निःसंदेह यह विज्ञान का युग है और हृदय से हम उसका आदर करते हैं और सभी वैज्ञानिक समुदाय का आभार व्यक्त करते हैं।

लेकिन क्या यही अंतिम सत्य है? विज्ञान की ऊंचाइयों से जो उदासीनता हमें अध्यात्म के क्षेत्र में देखने को मिली है उसे देखकर तो ऐसा ही लगता है। अध्यात्म सिर्फ कुछ आश्रमों और मठों तक सिमट कर रह गया है। दो चार संत हैं जो इसकी बात करते हैं बाकी संपूर्ण मानव जगत इस से अछूता ही है। जबकि एक आम मानव भी अपने दैनिक कार्यों को करते हुए भी अध्यात्मिक हो सकता है। क्योंकि यह जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकीन धरातल पर सचाई कुछ और ही है। इस उदासीनता के पीछे आज की भौतिकवादी सोच है। यहां यह भी देखना जरूरी है कि विज्ञान जिसने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है, वहीं उसने मनुष्य को आध्यात्मिकता से दूर भी किया है। वास्तव में विज्ञान सिर्फ व्यक्ति के भौतिक जीवन तक पहुंचने में सक्षम है लेकिन उसके आन्तरिक आयाम तक पहुंचने में जोसक्षम है उसका नाम अध्यात्म ही है। विश्व के एकांगी और असंतुलित विकास का कारण यह है कि आज का मनुष्य अधिक स्वार्थवादी एवं भौतिकवादी हो गया है, उसे कर्त्तव्य की अपेक्षा अधिकार पर अधिक ध्यान है। ज्यों ज्यों वह साधनों पर निर्भर हो रहा है, प्रकृति के शील का हरण कर रहा है, त्यों त्यों वह स्वयं के अस्तित्व से दूर होता जा रहा है। हमे सबसे पहले यह समझना होगा कि वास्तव में विज्ञान एवं अध्यात्म है क्या? तभी हम सत्य की खोज कर पायेंगे।

सरल शब्दों में कहें तो “यह क्या है” की जांच करना विज्ञान है और “मैं कौन हूं” की खोज करना ही अध्यात्म है। ध्यात्मिक होने का अर्थ है कि व्यक्ति अपने अनुभव के धरातल पर यह जानता है कि वह स्वयं अपने आनंद का स्रोत है। आध्यात्मिकता का संबन्ध मनुष्य के आंतरिक जीवन से है और इसकी शुरुआत होती है उसकी अंतर्यात्रा से। वे सभी गतिविधियाँ, जो मनुष्य को परिष्कृत, निर्मल बनाती हैं, आनन्द से भरपूर करती हैं, पूर्णता का एहसास देती हैं वे सब आध्यात्मिकता के दायरे में आती हैं। जबकि विज्ञानजगत में व्याप्त हर पदार्थ का सूक्ष्म व क्रमबद्ध अध्ययन करता है जो प्रयोगों द्वारा प्रमाणित किया जाता है वह इस खोज को मानव जीवन को अधिक सुगम बनाने के लिए संसाधन के रुप में प्रयोग करता है। लेकिन एक बात परमसत्य है, विज्ञान ने जितना अविष्कार करके उपकरण और साधन दिए हैं उतना ही असीमित संतोष भी मनुष्य को दिया है। अगर साधन और उपकरण आनन्द का अन्तिम श्रोत होते तो कदापि आज का मानव परमसुखी होता। लेकिन सत्य कुछ और है। अर्थात् परम सुख का सागर अध्यात्म में ही छिपा है।

पाश्चात्य जगत् को भारतीय तत्त्वज्ञान का संदेश देने वाले महान विश्वगुरू स्वामी विवेकानंद का यह विश्वास था कि “अध्यात्म विद्या, भारतीय धर्म एवं दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा।” उनका मत था कि ‘यदि मनुष्य के पास संसार की प्रत्येक वस्तु है, पर अध्यात्म नहीं है तो कुछ भी नहीं है। उनकी दृष्टि में मनुष्य की यह परा-प्रकृत्ति-आत्मा उतनी ही सत्य है, जितना कि किसी पाश्चात्य व्यक्ति की इन्द्रियों के लिए कोई भौतिक पदार्थ। अर्थात विज्ञान पदार्थ या वस्तु सापेक्ष है व फैक्ट्स पर आधारित है। विज्ञान पदार्थ को जानने की प्रक्रिया है, और जो प्रयोगों पर आधारित है। जबकि आध्यात्म विचार सापेक्ष है, वह स्वय को जानने की प्रक्रिया है। यह एक मनुष्य की आंतरिक यात्रा है जिसमें उसका स्वयं से साक्षात्कार होता है। अपने होने के अर्थों को जानना ही अध्यात्म की उपलब्धि है अतः विज्ञान वहिर्मुखी है और अध्यात्म अंतर्मुखी। विज्ञान वस्तुओं को विग्रह कर के उस पर विचार करता है, हर पदार्थ के खंड खंड कर के उसको समझना विज्ञान का कार्य है जबकि आध्यात्म योग पर आधारित है। योग का अर्थ ही जोड़ने से है मतलब मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का। अध्यात्म संपूर्ण ब्रह्मांड को समग्र रूप से देखता है। अध्यात्मिक दर्शन में सब कुछ एक है। जबकि विज्ञान में भेदात्मक दर्शन का समावेश है।

विज्ञान समान गुणधर्म वाले पदार्थ, वस्तु या जीव में ही कितनी भिन्नताएं ढूंढ लेता है जबकि आध्यात्म विभिन्न गुण धर्म वाले पदार्थ और जीवो को एक ही मानता है। वह कहता है हम सब एक ही हैं। वसुधैव कुटुंबकम संकल्पना अध्यात्मिक दर्शन से अवतरित हुई है। ना के वल मनुष्य अपितु संसार का हर जीव, वृक्ष, लताएं आदि सब में एक ही चेतना का समावेश है।

जहां नित्य नवीन आविष्कार जीव में भोग की प्रवृति को बनाए रखती है। वहीं अध्यात्म भोग के उपरान्त की स्थिति है वह त्याग की प्रक्रिया है। जहां सारे सुख साधन ओर उनका आकर्षण समाप्त हो जाता है। क्योंकि विज्ञान स्थूल है और अध्यात्म सूक्ष्म विज्ञान चूंकि पदार्थ, प्रयोग और प्रमाणों पर आधारित है, इसलिए इसके परिणाम तठस्थ ओर सत्य होते हैं जबकि अध्यात्म विश्वास, श्रद्धा व विचार पर अधारित है, इसलिए इसके परिणामों को मापा नहीं जा सकता और कई बार ज्ञान के अभाव में या गलत इंटरप्रिटेशन के कारण यह विषय भ्रम से भर जाता है। यह अध्यात्म पक्ष की एक कमजोर कड़ी है। धर्म का आडंबर करने वाले कुछ चंद लोगों ने इस विषय को अंधविश्वास और ढोंग से भर दिया है जिस कारण एक आम जनमानस इसकी गहनता को समझ ही नही पाता। वाकई इस छेत्र में भी एक क्रांति आनी चाहिए और अध्यात्म को तमाम आडंबरो से मुक्त किया जाना चाहिए जिससे प्राणी मात्र का कल्याण हो सके।

एक बात यह भी है कि विज्ञान प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित उत्खनन व विदोहन करने की प्रवृत्ति रखता है। जिसने न केवल अध्यात्मिक सत्ता को क्षति पंहुचाई है, अपितु पर्यावरणीय संपदा को भी भारी नुकसान पहुंचाया है। नाना प्रकार की पर्यावरणीय विकृत्तियों से आज हम सब जूझ रहे हैं। लेकिन अध्यात्म प्रकृति के संरक्षण पर बल देता है, वह हमे संसाधनों का विवेकपूर्ण भोग करना सिखाता है वह प्रकृति के कण कण को संजोने का मार्ग दिखाता क्योंकि वह दूरदृष्टा है वह कदाचित उस विदोहन के भयंकर परिणामों से अवगत है इसलिए उसमें हर जीव, प्राणी, पादपल्लव आदि के अस्तित्व का महत्व है।

महर्षि व्यास के अनुसार, विश्व में मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं। उसी में परम चेतना को उभारने वाली विद्या का नाम अध्यात्म है। वस्तुत: अध्यात्म का लक्ष्य है- मनुष्य के अंदर छिपी शक्तियों और सत्प्रवृत्तियों को मनोवैज्ञानिक पद्धति से इतना आगे बढ़ाना कि व्यक्ति के जीवन में देवत्व छलकने लगे। दूसरी तरफ विज्ञान का लक्ष्य है प्रकृति तथा पदार्थ में छिपी शक्तियों की जानकारी प्राप्त करना, जिससे मनुष्य के जीवन में कोई भौतिक कष्ट न रहे और वह सुख-सुविधा युक्त जीवन जी सके।

जीवन आत्मिक और भौतिक दोनों तत्वों से मिलकर बना है, इसलिए विज्ञान व अध्यात्म अलग-अलग होते हुए भी पूरक हैं। विज्ञान और अध्यात्म के संबंधों पर विश्व की प्रमुख हस्तियों के विचार इस प्रकार है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि “ का भविष्य उसके सही अर्र्थो में वैज्ञानिक और सच्चे आध्यात्मिक होने पर टिका है। विज्ञान को जहां धर्म से मानवीयता की सीख लेने की जरूरत है, वहीं धर्म के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग की आवश्यकता है।“

सापेक्षता सिद्धांत के जन्मदाता अल्बर्ट आइंसटीन के अनुसार, इस संसार में ज्ञान और विश्वास दो वस्तुएं हैं। ज्ञान को विज्ञान व विश्वास को धर्म कहेंगे। मैं ईश्वर को मानता हूं, क्योंकि इस सृष्टि के अद्भुत रहस्यों में ईश्वरीय शक्ति ही दिखाई देती है। अब विज्ञान भी इस बात का समर्थन कर रहा है कि संपूर्ण सृष्टि का नियमन एक अदृश्य चेतना कर रही है।

संत विनोबा भावे का कहना है कि “धर्म और राजनीति का युग बीत गया, अब उनका स्थान अध्यात्म और विज्ञान ग्रहण करेंगे।“

वैज्ञानिक हक्सले ने कहा था, धर्म को लोभ और भय से मुक्त किया जाना चाहिए। उसमें काल्पनिक मान्यताओं का निराकरण होना चाहिए और चेतना को परिष्कृत करने की उसकी मूल दिशा एवं क्षमता को प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

साइंस ऐंड रिलीजन के लेखक वैज्ञानिक एच. कैरोलिंग ने लिखा था, इक्कीसवीं शताब्दी में अध्यात्म को विज्ञान का और विज्ञान को अध्यात्म का अभिन्न अंग मान लिया जाएगा। तब विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय से ही उभय पक्षीय प्रगति का संतुलन आधार बन सकेगा।

हमारे समक्ष जो विश्व ब्रह्माण्ड है वह मूलतः दो सत्ताओं से मिलकर बना है- एक जड़ व दूसरा चेतन। जड़ सत्ता अर्था दार्थ का अध्ययन विज्ञान का विषय है जबकि चेतनसत्ता (आत्मा-परमात्मा का अध्ययन अध्यात्म का विषय है। अतः इस ब्रह्माण्ड को पूरे तौर से समझने के लिए हमें इन दोनों ही सत्ताओं को ध्यान में रखना हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान और अध्यात्म दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनो का स्रोत एक ही है। एक प्रसिद्ध श्लोकजो भगवत गीता से

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायम् भूत्वा, भविता, वा न भूय:

अजोनित्य: शाश्वतोयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

आत्मा का जन्म नहीं होता । उसकी मृत्यु भी नहीं होती । वह पहेले न थी, या अबके बाद नहीं होगी, ऐसा नहीं है । आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत, पुरातन है । शरीर का नाश होने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता । “ हे अर्जुन ! आत्मा को शस्त्रो काट नहीं सकते । अग्नि जला नहीं सकता । पानी भीगो नहीं सकता और वायु सूखा नहीं सकता । आत्मा, सर्वव्यापी, स्थिर, अचल और सनातन है । उसे अव्यक्त, अचिंत्य और विकार रहित कहेते हैं ।

**नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक: ।**  
**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥**

इस श्लोक में भी स्पष्ट रूप से कहा गया की आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं नही अग्नि जला सकती है। न उसको कोई दुख तपा सकता है न वायु बहा सकती है। अर्थात आत्मा की सत्ता अजर, व निराकार रुप में है वह कभी नष्ट नहीं होती न उसे उत्पन्न किया जा सकता है। वह सिर्फ एक शरीर से दूसरे शरीर में रूपांतरित होती है।

इसी तरह विज्ञान में जिसे law of energy conservation कहा गया है, वह इसी नियम पर अधारित है। उसके अंतर्गत भी यह बात कही गई है कि ऊर्जा ना तो उत्तपन्न की जा सकती है ना ही वह नष्ट होती है। वह केवल रुपांतरित होती है। देखा जाए तो विज्ञान और अध्यात्म दोनों एक ही बात कह रहे हैं फर्क मात्र शब्दों का है। जिसे अध्यात्म ने आत्मा कहा विज्ञान ने उसे ऊर्जा कहा है। अध्यात्म तथा विज्ञान दोनों की उत्पत्ति सृजन के मूल मंत्र के साथ हुई है।

विज्ञान एवं अध्यात्म जिस प्रकार एक ही श्रोत से उत्पन्न हुए हैं उसी प्रकार इन दोनों का उद्देश्य भी एक ही है। दोनों ही मनुष्य के कल्याण की दिशा में काम करते हैं। प्राणी मात्र के दुःख व शोक को हर के उसे जीवन में आनन्द की अनुभूति करवाना ही दोनों का लक्ष्य है। हम चाह कर भी किसी एक की सत्ता को नकार नहीं सकते! दोनों ही एक दूसरे के पूरक है। विज्ञान एवं अध्यात्म में “हो सकता है” जैसी अवधारणा के लिए कोई स्थान नहीं है। “ऐसा ही है” दोनों इसी पर कार्य करती हैं। कहने को तो जड़ सत्ता पदार्थ का अध्ययन विज्ञान का विषय है। जबकि चेतन सत्ता का अध्ययन अध्यात्म का विषय है। लेकिन ये सत ही दृष्टिकोण के आधार पर कहा जा सकता है। इस संबंध में गहन विचार करके हम जितनी गहराई में जायेंगे तो पाएंगे कि वास्तव मे जड़ या चेतन जैसा कुछ है ही नही, सब एक ही है और वह है चेतन। स्वभाव में जो पदार्थ जड़ दिखता है वह अपने कन्ही मूल में चेतन ही है। यह साइंस ने ही स्वीकार किया है। उदाहरण के लिए हर पदार्थ का निर्माण अणु के संगठित होने से हुआ है और अणु के अंदर जो इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन आदि हैं उन में भी गति है। वो आपस मे एक बॉन्ड बनाते हैं जिससे अणु बनता है अगर ऐसा ना हो तो पदार्थ बिखर जाएगा और कोई भी पदार्थ जो कुछ भी जिस रूप में दृष्टि गोचर हो रहा है वह आपने रूप में नही रह पाएगा।

इस तरह हम पाते हैं कि संरचनात्मक स्तर पर ब्रह्माण्ड का कण कण एक ही है। हम सब एक ही ऊर्जा से बने हैं। विज्ञान जिस कण कोन ही समझ पाया उसे उसने god particle का नाम दिया है। क्योंकि अणु के आगे भी कुछ ऐसा है जो खोजा गया है लेकिन उसे पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता क्योंकि वह अदृश्य है, निराकार है, और उसको उपकरण पर माप सकना अभी संभव नहीं है। लेकिन यही बात अध्यात्म हजारों वर्ष पूर्व में कह चुका है कि ब्रह्म निराकार निर्गुण है। शायद यही निर्गुण निराकार ब्रह्मविज्ञान का god particle हो सकता है।

अध्यात्म का मत है कि यह जगत नश्वर है। जगत अर्थात “जिसमें गति है” जो गतिशील है, निरन्तर परिवर्तनशील है और यहां हर पदार्थ अंत में नाश को प्राप्त होती हैं। यहां ऐसा कुछ भी विद्यमान नही जो अमर हो। और यही बात बहुत बाद में विज्ञान ने भी स्वीकार की, कि पृथ्वी गतिमान है। वह अपने धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। इसी कारण दिन रात व मौसम परिर्वतन होते हैं। विज्ञान ने मरण के सत्य को भी स्वीकारा है इसीलिए चाहे कितने ही एडवांस उपकारण बन गए हों, लेकिन वह मृत्यु को नही रोक सकते, वह अपने ही द्वारा बनाए गए उपकरणों प रexpairy date लिखकर देता है। उसकी खोज इस सत्य के सामने नतमस्तक है।

यह सत्य है कि विज्ञान मनुष्य के लिए सुन्दरतम उपहार है लेकिन उसमें जब तक कोई विकृति न हो। हमें विज्ञान की सीमाओं को समझना होगा और उसका विवेक पूर्ण प्रयोग करना होगा। एक वैज्ञानिक को चाहिए कि वह अपने प्रयोग और परीक्षणों में अध्यात्मिक दृष्टि कोण अपनाए और एक अध्यात्मिक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी अध्यात्मिक यात्रा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाए। अध्यात्म को धार्मिक आडंबरों से मुक्त करके उसकी सही व्याख्या करने की आवश्यकता है। जिस से वह हर मनुष्य के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सके। परम सत्य की खोज के लिए हमें विज्ञान एवं अध्यात्म दोनों को आत्मसात्करना होगा और यही वैज्ञानिक अध्यात्मवाद मूल है।

अध्यात्म हमारे स्वभाव की यात्रा है, मनुष्य का वास्तविक और सुख उसे बाह्य पदार्थो से प्राप्त नही हो सकता उसके लिए उसे आत्मकेंद्रित होना पड़ेगा अर्थात अंतर्यात्रा करनी पड़ेगी !! मनुष्य की चेतन, अचेतन और अवचेतन अवस्थाओं में अपनी आंतरिक शक्तियों को अनुभूत करने में उसे जो सुखानुभूति प्राप्त होती है वह अन्य किसी बाह्यकारकों द्वारा संभव नहीं है। विज्ञान के संदर्भ में जो आम अवधारणा है वो यह है कि वह भौतिक जगत की सुखसुविधाओं पर केन्द्रित है। आज वैज्ञानिक अविष्कारों ने दुनिया बदलकर रख दी है, बड़े-बड़े यांत्रिक उपकरण , ऊंची इमारतें , परमाणु हथियार ये सब विज्ञान की ही देन है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियां हमें अचंभित तो करती हैं किन्तु कई बार ये विकास के अतिरिक्त विनाश का भी कारण बनती हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि विकास का मॉडल न केवल सामाजिक और आर्थिक हो, वरन मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक अंतःसंबंधों और पर्यावरण संरक्षण पर भी आधारित हो। हमें ऐसा विकास चाहिए जो नैतिक मानकों से परिपूर्ण हो और नैतिकता आध्यात्मिक जीवन मूल्यों के अनुपालन से ही आएगी।

मेरा अभिमत यह भी है कि बाह्य सुविधाओं एवं कारकों के सृजन अतिरिक्त मनुष्य में अंतर्निहित दिव्यशक्तियों पर भी विज्ञान को अपना ध्यान केंद्रित करना चहिए ,उसे भी शोध का विषय बनाना चाहिए। योग, जप, ध्यान आदि आध्यात्मिक उपादान मनुष्य के मन –मष्तिष्क और व्यक्तित्व को पूर्ण विकसित बनाने में सहायक है। आध्यत्मिक संस्कारों से परिपूर्ण मनुष्य समाज के लिए एक वरदान अथवा संसाधन बन जाता है।

सन्दर्भसूची:

Shantikuni,Pragya, Abhiyaan.”विज्ञानएवंअध्यात्म मेंविरोधकहां?”. 8/7/2014.12:08 IST

<https://hindi.speakingtree.in/blog/content-402281/m-lite>

Dainik Jagran.”विज्ञान एवं अध्यात्मकानाता”.12/09/ 2014. 11:31 AM (IST)

<https://m.jagran.com/lite/spiritual/sant-saadhak-the-relationship-of-science-and-spirituality-11624675.html>

शुक्ल,डा.बी.पी..”अध्यात्म एवम विज्ञान मेंसंबंध” 10 years ago.

<https://www.pravakta.com/the-link-between-science-and-spirituality/>

Jani, Nirav.”अविनाशीआत्मा”. 9 years ago.

<https://niravjani.wordpress.com/2012/09/01/bhagavad-geeta>

<https://youtu.be/-6CaF8rwpG8>

<https://youtu.be/nx603c19s0g>

<https://youtu.be/jjFcbJcf7N8>